SWETA H. RANPURA

LECTURER

IN

SHREE H. N. SHUKLA GROUP OF COLLEGES, RAJKOT.

B. A. DEPARTMENT

HINDI SUBJECT

F.Y.B.A. SEM-1

ELECTIVE HINDI

PAPER -1

'आधुनिक हिन्दी काव्य'

आधुनिक हिंन्दी काव्य

ईकाइ -१

'पुष्प की अभिलाषा'

-माखनलाल चतुर्वेद

माखनलाल चतुर्वेदी

25
माखनलाल चतुर्वेदी 1889-1968
MAKHANLAL CHATURVEDI
1977
भारत
INDIA

माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय:-

- माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म ४ अप्रैल १८८८ में भारत के मध्यप्रदेश शहर के होशंगाबाद जिले के बाबई गांव में हुआ था।
- उनके पिताजी का नाम नंदलाल चतुर्वेदी था।
- उनके पिताजी गांव के प्राइमरी स्कूल में हिंदी अध्यापक थे।
- माखनलाल चतुर्वेदी को हिंदी, संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती आदि सभी भाषाओं का ज्ञान था।
- उनकी क्रांतिकारी कविताओंने भारत के स्वतंत्रता से सेनानियों के मन में देशभक्ति के रंग उजागर किए थे।
- इसी के चलते उन्हें अंग्रेजों द्वारा जेल भी जाना पडा।

- माखनलाल चतुर्वेदी प्रसिद्ध लेखक, निबंधकार, नाटककार एवं पत्रकार थे।
- उसकी प्रसिद्ध कृति में 'हिमतरंगिणी', 'युगचारण', 'साहित्य देवता', 'दीप से दीप जले' आदि कृति का समावेश किया गया है।
- उसको 'साहित्य अकादमी पुस्कार'
- १९५५ में 'विजेता (हिम तरांगिनी) पुरस्कार' और
- १९६३ में 'पद्मभूषण'पुरस्कार से नवाजा गया है।

- माखनलाल चतुर्वेदी ने कई ऐसी रचनाएं की है जो आज के समय में भी बहुत प्रसिध्द है और जीन्हे आज के कवि भी अपनी कविताओं में इस्तेमाल करते हैं|

- जब हमारे भारत देश के स्वतंत्रता सेनानी अंग्रेजों से भारत की आजादी के लिए लडाई कर रहे थे तब उनको और भारत की जनता को लडाई में सहयोग देने के प्रोत्साहन के लिए कविता की रचना की थी|

‘पुष्प की अभिलाषा’ कविता :-

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूंथा जाऊं,

चाह नहीं प्रेमी-माला के बिंध
प्यारी को ललचाऊं,

चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि डाला जाऊं,

चाह नहीं देवो के सिर पर
चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं,

मुझे तोड लेना बनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक!

मातृभूमि पर शीश-चढाने,
जिस पथ पर जावे वीर अनेक!

‘पुष्प की अभिलाषा’ कविता का भावार्थ:-

- माखनलाल चतुर्वेदी की जेल में रचित यह कविता बिलासपुर केन्द्रीय जेल में जीवंत है ,
- जो क्रांतिकारी के अगाध राष्ट्रप्रेम का निरंतर एहसास कराता है|
- वहीं दूसरे रूप में आज भी समाज में यह कविता पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से बच्चों और बडों में राष्ट्रप्रेम का अलख जगा रही है|

- ‘पुष्प की अभिलाषा’ शीर्षक कविता का मुख्य प्रतिपाध्य आत्मत्याग और आत्मोत्सर्ग की भावना है|
- यह गीत गुलामी की जंजीरों को तोडने के संदर्भ में लिखी गई है|
- एक फूल के माध्यम से कवि ने देशभक्ति का संदेश दिया है|
- इस कविता में पुष्प को माध्यम बनाकर अपनी राष्ट्रभक्ति और स्वतंत्र चेतना का संदेश दिया है।
- कवि माखनलाल चतुर्वेदी जी ने एक फूल की इच्छा को माध्यम बनाकर अपनी अभिव्यक्ति की है।
- कवि चाहते है कि आज इस आजादी के संग्राम के दौर में एक लघु पुष्प भी विरो और बलिदानों के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने की इच्छा रखते है।

- कवि चाहता है की आमतौर पर फूल देवी-देवताओ के गले का हार बनते हैं,
- प्रेमी-माला के रूप में सजाने का काम आते हैं,
- देवो के शीश पर चढाए जाते हैं
- परंतु आज आजादी के इस उत्सव में उसकी भी इच्छा बदल गई है|
- उसकी एकमात्र अभिलाषा यह है की भारत माता की आजादी की लडाई लडने वाले वीर जिस रास्ते से गुजरे उसे वही फेंक दिया जाए|

- पुष्प की इस अभिलाषा से जाहिर है कि, वह तमाम देवी-देवताओं, प्रेमी-प्रेमिकाओं से बढ़कर आज विंरो के सम्मान में धूल में लौटने की इच्छा रखता है।

- इस तरह महान कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने एक फूल की अभिलाषा बताई है|

- माखनलाल चतुर्वेदीजी इस कविता में बताते है कि जब माली अपने बगीचे से फूल तोडने जाता है तो माली फुल से पूछता है की तुम कहां जाना चाहते हो?
- माला बनना चाहते हो? या भगवान के चरणों में चढाया जाना चाहते हो?
- तो फूल कहता है की मेरी इच्छा यह नहीं है कि में किसी स्त्री के बालों का गजरा बनू|
- मुझे तोडकर उस राह में फेक देना जहां शूरवीर मातृ भूमि की रक्षा के लिए अपना शीश चढाने जा रहे हो| मैं उन सूरवीरो के पैरों तले आकर खुद पर गर्व महसूस करूंगा|

‘पुष्प की अभिलाषा’ कविता का सारांश:-

इस कविता द्वारा माखनलाल जी ने यह बताने की कोशिश की है की जब कभी माली अपने बगीचे से अपने फूल तोडने जाता है तो जब माली फूल से पूछता है की तुम कहां जाना चाहते हो? माला बनना चाहते हो? या भगवान के चरणों में चढाया जाने चाहते हो?

q **तो इस पर फूल कहता है** –

- ü मेरी इच्छा ये नहीं की मैं किसी सुंदर स्त्री के बालों का गजरा बनू...
- ü मुझे चाह नहीं की मैं दो प्रेमियों के लिए माला बनूं...
- ü मुझे ये भी चाह नहीं की किसी राजा के शव पर मुझे चढाया जाये...
- ü मुझे चाह नहीं की मुझे भगवान पर चढाया जाये और मैं अपने आप को भाग्यशाली मानू|

- आजाद भारत की संकल्पना को साकार करने में वैचारिक क्रांति का अहम योगदान रहा है|
- सत्याग्रही के तौर पर साहित्यकार और कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जमकर राष्ट्रप्रेम का अलख जगाया|
- बिलासपुर का सेंट्रल जेल के ऐसे ही एक राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी ने सत्याग्रही के तौर पर बिलासपुर सेंट्रल जेल में रहते हुए अमर कविता 'पुष्प की अभिलाषा' का लेखन किया जो आज देश के हर वर्ग मे राष्ट्रप्रेम का अलख जगा रही है|
- जेल में आज भी उस पल और उस व्यक्तित्व को 'भारतीय आत्मा' का नाम देकर जीवंत रखा गया है|

- इसका गवाह बना बिलासपुर का केन्द्रीय जेल जहां सैकडों देशभक्तों को अंग्रेजों ने बंदी बना रखा था,
- जिसमें एक प्रसिद्ध राष्ट्रकवि और सत्याग्रही पंडित माखनलाल चतुर्वेदी भी रहे|
- जिन्हें अंग्रेजों ने ५ जुलाई, १९२१ से लेकर १ मार्च, १९२२ तक कैद में रखा|

- १८ फरवरी,१९२२ को बैरक नंबर ९ मैं रहकर उन्होंने एक ऐसी कविता की रचना की जिसने समूची क्रांति में देश प्रेम का ज बा पैदा कर वीर सपूतों की फौज खडी कर दी और ये कविता का नाम 'पुष्प की अभिलाषा' है|

धन्यवाद